E ISSN: 2455-1511

Sanskruti International Multidisciplinary Research Journal

INDEXED, PEER-REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

Volume V Issue IV Apr-May-Jun 2020

URL:www.simrj.org.in Journal UOI:1.01/simrj

IFSIJ IMPACT FACTOR: 5.355

Editor-in-Chief
SANTOSH BONGALE

IMPACT FACTOR : 5.355

E-ISSN : 2455-1511

CERTIFICATE

This is to certify that Prof./Dr./Mr./Mrs./…सीमा चन्द्रन…..…

Has contributed a paper as author / co-author to

Sanskruti International Multidisciplinary Research Journal

(INDEXED, PEER-REVIEWED JOURNAL)

Title.........लेस्बियन बहुलता पर केन्द्रित कहानियाँ................

And has got published in Volume ...V…. Issue ...IV...June 2020.

The Editor-in-Chief and The Editorial Board appreciate the intellectual Contribution of the author /co-author.

Executive Editor
SIMRJ

Editor-In-Chief
SIMRJ

SANSKRUTI INTERNATIONAL
MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL
Journal homepage: http://www.simrj.org.in Journal UOI: 1.01/simrj

लेस्बियन बहुलता पर केन्द्रित कहानियाँ

डॉ. सीमा चन्द्रन

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी व तुलनात्मक साहित्य विभाग, केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड केरल-671123

ई-मेल- drseemachandrancukhindi@gmail.com मोबाइल- 09447720229

लस्बियन बहुलता भी क्योर में शामिल एक अलग रूप में केन्द्र में आता विषय बनता जा रहा है। लेस्बियन स्त्रीवादी साहित्य समीक्षा के मानदंडों के निर्माण की परंपरा बड़ी पुरानी है। इन सिद्धांतकारों-समीक्षिकाओं में बानी जीमिरमैन, बारबरा स्मिथ, एड्रीनीरिच, जीनेट रुले, मोनिका वीटिंग, वर्जीनिया वुल्फ, लीविसरीना, डायना फूल, संडे वूचर, इली बुल्किन, लिलियन फेडरमैन, जीनित फोस्टर, डोलोर क्लिशे, एलिनी मार्क्स, मेरीलिवर्टिन, जनी गुर्को, वार्था हेरिस, वी. हावगीज, मार्ग्रेट हाक्स, एलिज़ाबेथ एडिल आदि का कार्य महत्वपूर्ण माना गया है। लेस्बियन स्त्रीवादी चिंतन की मान्यता है कि सामाजिक व्यवस्था में अगर स्त्री सबसे अधिक उत्पीड़ित है तो स्त्रियों में लेस्बियन स्त्री को सबसे अधिक दमन, उत्पीड़न एवं उपेक्षा का सामना करना होता है। लेस्बियन पदबंध स्त्री की स्त्री के प्रति काम-दशा मात्र का प्रतीक नहीं वरन् विगत कई वर्षों से इस विचारधारा के साथ कई और आयाम जुड़े हैं। 'एकाकिनी' उपन्यास आशा सहाय की *पहली रचना* है जो लेस्बियन विचार को लेकर चलती है। इस उपन्यास की प्रमुख स्त्री पात्र लेस्बियन है। 'एकाकिनी' का प्रकाशन 1947 ई. में हुआ। इसी तरह इस्मत चुगताई की

कहानी 'लिहाफ' (1941) लेस्बियन कहानी है। हिन्दी उर्दू की ये दो प्रथम रचनाओं के माध्यम से इस विचारधारा पर बहस हो सकती है। इन दोनों में लेस्बियन का नज़रिया एकदम भिन्न है। इसे समझने से पहले इन्हें किस श्रेणी में रखा जाय यह देखना होगा। भारतीय परंपरा में लेस्बियन अछूत मानी गई थी? क्या इन्हें स्त्री श्रेणी में रखा जाए? या फिर दोनों ही श्रेणी में न रखा जाए?

एकाकिनी और 'लिहाफ' में दो तरह के अर्थ प्रत्यक्ष होते हैं। 'लिहाफ' में लेस्बियन का अर्थ है स्त्री का स्त्री की तरफ कामुक दशा का रूपायन, जबकि 'एकाकिनी' में इस अर्थ के साथ-साथ स्त्री की सक्रियता और प्रतिरोध की अभिव्यक्ति भी हुई है। भारतीय परंपरा में जहाँ वर्णव्यवस्था के आधार पर प्रत्येक वर्ग के कार्य निर्धारित किए गए हैं उसी प्रकार स्त्री-पुरुष के भी कार्य पहले से तय हैं। स्त्री क्या काम करेगी? पुरुष क्या काम करेगा? यह समाज ने तय कर रखा था। अतः लिंग को आधार बनाकर व्यक्ति की पहचान निश्चित करने की परंपरा हमारी परंपरा में गहरे तक जड़ें जमाकर बैठा है। भारतीय चिंतकों ने लेस्बियन को स्त्री-पुरुष से भिन्न पहचान पर स्वीकार नहीं किया। लेस्बियन को स्त्री के लिंग के तहत विश्लेषित किया गया है। लेस्बियन के अस्तित्व को अस्वीकार करने का मुख्य कारण यही रहा कि प्राचीन काल में लेस्बियन को अछूत करार दिया गया।

लेस्बियन स्त्री है, किंतु उसका समग्र रवैया स्त्री से भिन्न है। यह परंपरा के उस गर्भ से उपजा है जहाँ स्त्री को अस्वीकार किया गया। इसलिए अपनी अस्मिता की पहचान के लिए एक नया वर्ग उपजा जिसे हम *लेस्बियन* के नाम से जानते हैं। इनकी

संवेदनाएँ, मूल्यबोध, मिजाज़, सामाजिक बोध आदि भिन्न होते हैं। लेस्बियन दृष्टिकोण में राजनीति के अंश होते हैं। इनका मुख्य लक्ष्य पुरुषसत्तात्मकता की खिलाफत करना है। *लेस्बियन वे हैं जो स्त्री होते हुए भी स्त्री से भिन्न नज़रिया रखते* हैं। अतः लेस्बियनवाद को नारीवाद से भिन्न ही देखा जा सकता है। पुरुष के साथ शारीरिक संबंधों, संवेदनात्मक और भावुक रिश्ते के अभाव, शादी से स्वतंत्रता या अस्वीकार, पुरुष पर किसी भी तरह की निर्भरता का निषेध इत्यादि के कारण लेस्बियन स्त्री एकदम भिन्न नज़र आती हैं। जब स्त्री अपनी काम संबंधी भूमिका का अतिक्रमण कर जाती है तो वह लेस्बियन कहलाती है। यह नाम पुरुष की देन है। ये औरतें पुरुष वर्चस्व को चुनौती देतीं हैं। वे अपने अधिकारों की माँग रखती हैं। अपने अधिकारों के लिए लड़तीं हैं। मौजूदा हालात में स्त्रियों पर लगाए मानदंड़ों, आचार संहिता को चुनौती देती हैं। 'एकाकिनी' की *कला* नामक नायिका इन सभी प्रचलित धारणा को ठुकराती है, चुनौती देती है। मौजूदा हालात में असली औरत वह है जो पुरुष की माने और उसकी अनुचर हो। लेस्बियन की जीवनचर्या में पुरुषाधारित कोई पहलू नहीं। वह उन सभी कारकों को उखाड़ फेंकना चाहती है जो पुरुष से जुड़े हों। चाहे वह प्यार का प्रसंग हो चाहे काम की इच्छा। वह सभी मामलों में स्वायात्तता पर ज़ोर देती है। 'लिहाफ' की *बेगमजान* को यदि जानने की कोशिश में मात्र स्त्री के साथ स्त्री के रिश्ते के आधार पर पढ़ेंगे तो लेस्बियन की संकुचित मानसिकता में बंध जाने का खतरा है। अपितु हमें लेस्बियन की अस्मिता को ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखना होगा। तभी लेस्बियन पाठ के बदलते अर्थ, व्यक्तिनिष्ठता और बदलती आत्मप्रस्तुति को पढ़ पाएँगे। लेस्बियन पाठ एक गतिशील पाठ है। अतः अर्थ भी गतिशील है। लेस्बियन स्त्रियों का अनुभव एकदम अलग और

गतिशील है। यह अनुभव हमें सामान्य जीवन के परे ले चलता है और वह हमें असामान्य दिखने लगता है। जीमिरमन, वानी, 1985/183ने कहा कि अगर हम लेस्बियन को सिर्फ दो स्त्रियों के कामुक संबंधों के रूप में देखेंगे तो अनुभवों का अधूरा रूप सामने आएगा। लेस्बियन चरित्र को पढ़ने की एक दृष्टि यह है कि उस चरित्र को राजनीतिक सहानुभूति से पृथक करके देखा जाए। *(स्टीम्पलन, कैथरीन/1981/364)* दूसरा दृष्टिकोण उसे राजनीतिक तौर पर परिभाषित करने पर ज़ोर देता है। *(स्मिथ, बारबरा/1977/39)*

वास्तव में लेस्बियन वे हैं जो अपनी बात को खुले तौर पर लिखें।आमतौर पर लेखिकाएँ चुप रहती हैं। वे अपनी बात कहने के लिए नई आचार संहिता अख्तियार कर लेती है। जैसे किसी पुरुष चरित्र को गढ़ लेना। उसी के माध्यम से सुरक्षित ढ़ंग से अपने भावात्मक अहसास को जताती है। कविता के क्षेत्र में ऐसी महिलाएँ हैं जिसने ऐसे अंदाज़ को अपनाया है। मध्ययुग की कविताओं में राधा के प्रति प्यार और सखी भाव को व्यक्त करते चरित्र में अधिकांशतः कृष्ण को संबोधित करती पाई गईं हैं। वर्तमान काल में लेखिकाएँ लेस्बियन अभिव्यक्ति प्रत्यक्ष करने में विश्वास रखती हैं। 'लिहाफ' कहानी में एक चादर का पर्दा है और कथावाचिका एक बच्ची। पर 'एकाकनी' उपन्यास में सब खुला है।

पश्चिम के लेस्बियन स्त्रीवादी साहित्यकारों एवं समीक्षकों में नकारात्मक पहलुओं की चर्चा मिलेगी। लेस्बियन के सकारात्मक रूपों और उपलब्धियों की चर्चा कम से कम मिलेगी। लेस्बियन साहित्य परंपरा में *जेनेट रूल* की कृति *'लेस्बियन इमेजेज'* (1975) को

महत्वपूर्ण स्थान मिला है। उन्होंने लिखा है कि लेस्बियन स्त्री लेखिकाओं ने कहानी, जीवन चरित, आत्मकथा आदि में इमेज प्रस्तुत कर अपनी बात कही है। यहाँ हम लेस्बियनवाद के बदलते रुख का बहुल रूप देख सकते हैं। उनके अनुसार लेस्बियन साहित्यकार वही है जो खुद लेस्बियन हो। *रूल* की पद्धति यथार्थवादी और जीवनीपरक है। वे लेस्बियन अस्मिता को अंतर्निष्ठ मानती है। सन् 1981 में *लिलियन फेडरमैन* की पुस्तक 'सरपासिंग *दि लव ऑफ मेन*' में लेस्बियन अस्मिता की सामाजिक निर्माण का रूप व्यक्त होता है। उनका कहना है कि लेस्बियन औरतें समाज में हमेशा से रही हैं। आम धारणा रही है कि स्त्री अ-कामुक होती हैं अतः स्त्री के साथ स्त्री दोस्त को पुरुषों ने सहिष्णुता से देखा है। स्त्री के प्रति स्त्री का समर्पण भाव, साझेदारी और आंतरिक लगाव दोनों ही लिंगों में समान रूप से प्रशंसा और आदर की दृष्टि देखी गयी है। *फैडरमैन* की दृष्टि से एक औरत का दूसरी के साथ रोमैंटिक याराना हो, एक दूसरे के लिए सब कुछ करने के लिए तैयार हों। एक साथ रहते हों। एक दूसरे से लगातार विचारों का आदान-प्रदान करते हों, एक-दूसरे को मन से खुश रखते हों, भयानक कष्ट दें...ईर्ष्या करें....एक-दूसरे से गलें, चूमें, हाथ में हाथ डालकर घूमें, यहाँ तक कुछ लेस्बियन औरतें ऐसी भी हों जो सारी रात एक-दूसरे के साथ सोएँ। *(फेडरमैन, लिलियन/1981/84)* 19वीं शताब्दी के बाद स्त्री के अधिकारों की माँग सामाजिक व राजनीतिक तौर पर हुई। पुरुषों ने स्त्री की स्त्री के प्रति लगाव को देखा और उसकी क्षमता को जाना। *एड्रीनी रीच* ने लेस्बियन साहित्य में निरंतरता की धारणा दी। उनकी राय थी कि इसमें प्रत्येक औरत के जीवन, इतिहास और अनुभवों को शामिल किया जाना चाहिए। लेस्बियनवाद को सामान्य स्त्री अनुभवों के रूप में विश्लेषित किया जाना चाहिए। विलिंगी कामुकता पुरुष के भय के गर्भ

से पैदा होती है जिसमें स्त्री को खो देने का भाव निहित होता है। वही मर्द स्त्री को संपूर्ण रूप में पा सकता है जो स्त्री की शर्तों को माने वरना वह हाशियेकृत हो जाएगा। रीच ने लेस्बियन को स्त्री का अंग माना। उनका मानना है कि राजनीतिक व सांस्कृतिक अंग स्त्री को केवल पुरुष की सी कामुकता के अंदर कैद मानता है बल्कि इससे अभिप्राय इन सबसे कई आगे है। इससे लेस्बियन के अन्य अवदानों की उपेक्षा होती है। लेस्बियनिज्म में रीच प्रतिरोध का भाव देखती है जहाँ वह पितृसत्तात्मकता का विरोध करती है। यह प्रच्छन्न रूप से स्त्री को प्राप्त करने के अधिकार पर हमला है। इससे कई हालात पैदा हो सकते हैं। जैसे आत्मघृणा, आत्महत्या, नशेबाज़ी, आपसी हिंसा आदि।

ऐतिहासिक दृष्टि से लेस्बियन वंचित और अछूत रहीं हैं। जिसप्रकार पुरुष समलैंगिकता का ज़िक्र होता है वैसे स्त्री समलैंगिकता को जगह नहीं मिल पाई। पर आज की तारीख में यह अपनी पहचान कर रहा है और बहुलता में केन्द्र ढूँढ़ रहा है। *रीच* का कहना है कि स्त्री में अपनापन, सखीभाव कामुकता के बगैर भी हो सकता है। उसमें मातृत्व की भावना को अधिक मान्यता देनी चाहिए। इसे पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण से नहीं देखना चाहिए। कामुकता को पुरुष की बजाय स्त्री के नज़रिए से पढ़ना चाहिए। शरीर के एक हिस्से तक सभी ऊर्जा केन्द्रित नहीं होती इसे व्यापक अर्थ में समझना होगा। रीच के अनुसार लेस्बियन वह है जो एक ही कमरे में रहे। आजीविका का बंदोबस्त खुद करें। किसी भी परंपरागत जीवन शैली को अस्वीकार करें। अगर मजबूरी में शादी हो जाए तो अपने पति को त्याग दें। लेस्बियन विमर्श में *मोनिका वीटिंग* का महत्वपूर्ण स्थान है। वे परिवर्तनकामी, पार्थ्यवादी लेस्बियन सिद्धांतकार हैं। उन पर फ्रांसीसी संरचनावाद और

मार्क्सवाद का गहरा प्रभाव है। इनका दृष्टिकोण अमरीकन लेस्बियन चिंतकों से भिन्न है। मर्मवादी चिंतन (एशेंसियलिज्म) की भी वे तीखी आलोचना करतीं हैं। उनका कहना है कि मर्मवाद, पुरुष हितों के प्रति भ्रम पैदा करता है। विलिंगी विमर्श कामुक पदबंधों को स्वाभाविक एवं बयोलोजिकल अंदाज़ में पेश करता है।

वीटिंग की राय में स्त्री के लिए नई भाषा और परिभाषा की ज़रूरत है। स्त्री का अर्थ है भय और उसके खिलाफ सुरक्षा की कोशिश। स्त्री का अर्थ तो विलिंगी अर्थव्यवस्था, विलिंगी विचार व्यवस्था में ही समझ में आता है, लेस्बियन इससे भिन्न है, वह औरत नहीं है। *वीटिंग* के नज़रिए की डायना फूज ने *"मोनिका वीटिंग एंटी एसेंशियलिस्ट मेटीरियलिज़्म"* में विस्तार से समीक्षा की है।लेस्बियन स्त्रीवादी साहित्य के परिप्रेक्ष्य की यह विशेषता है कि लेस्बियनवाद की व्याख्या के लिए जीवनचरित्र से जोड़कर देखने की कोशिश नहीं की जाती। लेस्बियन समीक्षक यदि पाठवादी समीक्षा से मदद लें तो बेहतर होगा। यदि पाठ स्वयं लेस्बियन रीडिंग को महत्व दें तो जीवनी की सहायता की ज़रूरत नहीं होगी। समीक्षकों ने प्रश्न उठाया है कि लेस्बियन पाठ किसे कहें? लेस्बियन के लिए लिखे पाठ को लेस्बियन पाठ मानें या उसे *लेस्बियन पाठ* मानें जो लेस्बियन विज़न को लेकर चलता हो। पूर्ण विश्लेषण पर यह निष्कर्ष निकल सकता है कि स्त्री द्वारा लेस्बियन पर लिखा गया, उसके विज़न को व्यक्त करने वाला पाठ ही लेस्बियन पाठ है। *(जीमिरमन, वानी/1985/188)* इनकी अभिव्यक्ति शैली और प्रतीकों के प्रयोग में भिन्नता पाई जा सकती है। लेस्बियन पाठ वर्तमान का पाठ होगा। *शैली मांट* द्वारा रची गई रचनाओं को संपादित कर संकलित कर उत्तरसंरचनावादी परिप्रेक्ष्य में

'*न्यू लेस्बियन क्रिटिसिज्म*' (1992) कृति प्रकाशित हुई। इसमें *रीना लीविस* लिखती हैं कि सामयिक लेस्बियन सांस्कृतिक, राजनीति के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही है कि किस तरह लेस्बियन की बहादुराना आत्मछवि और इच्छाओं को सुसंगत ढ़ंग से पेश किया जाए।

'लिहाफ' कहानी की *बेगमजान* विवाहित है और चालीस-बयालीस साल की है। पति बड़े खानदान के हैं, बालप्रेमी हैं। यह बालप्रेमी (होमोसेक्सुअल) पति और लेस्बियन पत्नी की अद्भुत कहानी है। 'लिहाफ' कहानी में कथावाचिका एक छोटी सी बच्ची है। प्रश्न उठता है कि इस्मत चुगताई ने कथावाचिका के रूप में एक छोटी सी बच्ची को क्यो चुना। कहानी में कथावाचिका अपने बचपन के अनुभव को बताती है। समूची कहानी में बेगमजान, उनकी मालिश, मालिशिया रब्बो, इत्र-तेल-फुलेल का वर्चस्व है। इसकी प्रस्तुति पुनरावृत्ति के रूप में होती है। इन समस्त चीज़ों के इर्द-गिर्द बेगमजान का चरित्र विकसित होता है। कहानी में एक बार मालिश का सिलसिला शुरू हुआ तो चलता रहता है। बेगमजान कथावाचिका बच्ची के साथ भी अपने जिस्म को गर्माने की अस्वाभाविक कोशिश बगैर लिहाफ के करती है। परंतु रब्बो के साथ दोनों बार लिहाफ ऊपर-नीचे होता है। कहानी के अंत का दृश्य मुख मैथुन का होता है। लिहाफ कहानी का सबसे दिलचस्प पहलू है बेगमजान की खुजली। उन्हें कोई चर्म रोग नहीं था। ना ही वे नहाए बिना रहती थी। वे बराबर नहाती थी। इनकी खुजली का होना संयम टूटने का प्रतीक है। बेगमजान अपने शरीर की जरूरतों और आकांक्षाओं को खुलेपन के साथ जीती है। विलिंग कामुकता के विकल्प के रूप में सचेत रूप से अपनी कामुकता को अभिव्यक्ति देती हैं।

सामंती और बुर्जुआ वर्ग ने सेक्स को जिस तरह छिपाया, उस पर चुप्पी लगाई, समाज में अनुपस्थित रूप में रूपायित किया। इस सबके खिलाफ प्रतिरोध भाव के रूप में इस्मत चुगताई ने सेक्स की ज़िंन्दगी को आम समस्या के रूप में पेश किया है।